



CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2026-8.584



Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

कलिंग नरेश खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख: मौर्योत्तर युगीन राजनीति, संस्कृति एवं पुरालेखशास्त्र का आलोचनात्मक अध्ययन

डॉ दिग्विजय यादव

सहायक आचार्य (इतिहास)

राजकीय महाविद्यालय जालसु, जयपुर, राजस्थान

Email- digvijayyadav1900@gmail.com, Mob – 8233302525

First draft received: 19.08.2026, Reviewed: 26.08.2026

Final proof received: 29.08.2026, Accepted: 29.09.2026

सारांश

प्राचीन भारतीय इतिहास के पुनर्निर्माण में पुरातात्विक साक्ष्यों, विशेषकर अभिलेखों की भूमिका असंदिग्ध है। मौर्य साम्राज्य के पतन के पश्चात् प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व में कलिंग (आधुनिक ओडिशा) एक स्वतंत्र एवं शक्तिशाली साम्राज्य के रूप में उदित हुआ, जिसका नेतृत्व महामेघवाहन (चेदि) वंश के तृतीय शासक, सम्राट खारवेल ने किया। प्रस्तुत शोध पत्र भुवनेश्वर स्थित उदयगिरि पहाड़ियों की हाथीगुम्फा गुफा में उत्कीर्ण खारवेल के प्रशस्ति-लेख का अंतर्विषयक विश्लेषण करता है। यह पत्र अभिलेख की पुरालेखीय विशेषताओं, खारवेल के 13 वर्षीय कालानुक्रमिक शासन, उसके अखिल भारतीय सैन्य अभियानों, जल-प्रबंधन नीति, जैन धर्म के विकास में उसके योगदान तथा 'भारतवर्ष' की प्रथम पुरातात्विक संकल्पना का गहन अन्वेषण करता है। यह पत्र इस तथ्य को भी उद्घाटित करता है कि खारवेल प्रथम भारतीय शासक था जिसने हिन्द-यवन शासकों से प्रेरित होकर 'महाराज' की उपाधि धारण की थी।

मुख्य शब्द - खारवेल, हाथीगुम्फा अभिलेख, कलिंग, महाराज की उपाधि, महामेघवाहन वंश, प्राकृत भाषा, ब्राह्मी लिपि, जैन धर्म, भारतवर्ष, पुरालेखशास्त्र।

प्रस्तावना

प्राचीन भारतीय इतिहास का मौर्योत्तर काल (लगभग 200 ईसा पूर्व से 300 ईस्वी) राजनीतिक विकेंद्रीकरण, नवीन क्षेत्रीय राजवंशों के उदय तथा सांस्कृतिक आत्मसातीकरण का युग था [1]। इसी कालखंड में कलिंग के चेदि या महामेघवाहन वंश ने पूर्वी भारत की राजनीति में एक निर्णायक भूमिका निभाई [2]। इस वंश के सबसे प्रतापी शासक खारवेल की ऐतिहासिकता और उपलब्धियों को जानने का एकमात्र, किंतु पूर्णतः प्रामाणिक स्रोत 'हाथीगुम्फा अभिलेख' है।

अशोक के अभिलेखों के विपरीत, जो धम्म और नैतिकता पर बल देते हैं, हाथीगुम्फा अभिलेख एक विशुद्ध 'प्रशस्ति' है। यह अभिलेख शासक के जीवन और उसके शासन के प्रथम 13 वर्षों का क्रमबद्ध ऐतिहासिक विवरण प्रस्तुत करता है, जो प्राचीन भारतीय इतिहास-लेखन में दुर्लभ है।

पुरालेखीय विशेषताएं एवं इतिहास-लेखन

यह अभिलेख उदयगिरि (प्राचीन कुमारी पर्वत) की एक प्राकृतिक गुफा के लटकते हुए छज्जे पर 17 पंक्तियों में उत्कीर्ण है [3]।

लिपि और भाषा: इसकी लिपि प्राचीन ब्राह्मी है, जो अशोककालीन ब्राह्मी से थोड़ी विकसित अवस्था (ईसा पूर्व प्रथम सदी) की है। इसकी भाषा प्राकृत है, जिसमें जैन प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है।

खोज और पाठान्तर का इतिहास: 1820 में ए. स्टर्लिंग (A. Stirling) द्वारा खोजे जाने के बाद जेम्स प्रिंसेप (1837) और

अलेक्जेंडर कनिंघम (1877) ने इसके पाठ का प्रयास किया। 1884 में भगवान लाल इंद्रजी ने सर्वप्रथम इसमें 'खारवेल' का नाम पढ़ा। अंततः 1920 के दशक में के. पी. जायसवाल, आर. डी. बनर्जी और बी. एम. बरुआ ने इसका सबसे सटीक वैज्ञानिक पाठ प्रस्तुत किया [4][5][6]।

खारवेल की उत्पत्ति, राज्याभिषेक एवं 'महाराज' की ऐतिहासिक उपाधि

अभिलेख की प्रारंभिक तीन पंक्तियां खारवेल के व्यक्तिगत जीवन को समर्पित हैं। वह 'राजर्षि वासु' के कुल और महामेघवाहन वंश में जन्मा था। 15 वर्ष की आयु तक उसने कुमार-क्रीडाओं में भाग लिया और तत्पश्चात् 9 वर्षों तक युवराज के रूप में उसने लेख, रूप, गणना और व्यवहार में पारंगतता प्राप्त की।

24 वर्ष की आयु में उसका राज्याभिषेक हुआ, जहाँ उसने कलिंग की संप्रभुता के प्रतीक स्वरूप 'महाराज' की उपाधि धारण की।

(ऐतिहासिक साक्ष्य एवं नवीन विमर्श): भारतीय इतिहास-लेखन में यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण पुरातात्विक तथ्य है कि खारवेल प्रथम स्वदेशी (भारतीय) शासक था, जिसने 'महाराज' की उपाधि धारण की थी। खारवेल से पूर्व के स्वदेशी शासक (जैसे मौर्य सम्राट) प्रायः 'राजा' या 'देवानांपिय' (अशोक के संदर्भ में) उपाधियों का ही प्रयोग करते थे। प्राचीन भारत में 'महाराज' (यूनानी भाषा में Basileos Megalou और प्राकृत में Maharajasa) जैसी भारी-भरकम उपाधियों के प्रयोग की परंपरा सर्वप्रथम उत्तर-पश्चिम भारत में शासन करने वाले इंडो-ग्रीक (हिन्द-यवन) शासकों ने प्रारंभ की थी। हिन्द-यवन शासकों

से ही प्रेरित होकर खारवेल ने पूर्वी भारत में पहली बार इस उपाधि को अपनाया और हाथीगुम्फा लेख की प्रथम पंक्ति में स्वयं को "ऐर महाराज महामेघवाहन" घोषित किया [7][8]।

खारवेल का कालानुक्रमिक सैन्य एवं प्रशासनिक विवरण

हाथीगुम्फा अभिलेख खारवेल के शासन के प्रथम 13 वर्षों का विस्तृत लेखा-जोखा देता है:

शक्ति का सुदृढीकरण एवं प्रारंभिक विस्तार (वर्ष 1 से 4)

प्रथम वर्ष: खारवेल ने एक कल्याणकारी शासक की भांति 35 लाख मुद्राओं के व्यय से चक्रवात से ध्वस्त अपनी राजधानी 'खिवीर' (कलिंग नगर) के गोपुरों (द्वारों) और जलाशयों का जीर्णोद्धार करवाया।

द्वितीय वर्ष (सातवाहनों से संघर्ष): उसने दक्कन के शक्तिशाली सातवाहन शासक शातकर्णि प्रथम की सैन्य शक्ति की परवाह न करते हुए पश्चिम की ओर एक चतुरंगिणी सेना (अश्व, गज, रथ, पदाति) भेजी। सेना ने कन्हवेणा (कृष्णा) नदी पार कर असिकनगर (अश्मक) में दहशत फैलाई [9]।

तृतीय एवं चतुर्थ वर्ष: उसने गंधर्व विद्या (संगीत व कला) का प्रदर्शन कर प्रजा का रंजन किया तथा मौर्यों के पूर्व सामंतों (विद्याधरों, रठिकों और भोजकों) को पराजित कर कलिंग की अधीनता स्वीकार करने पर विवश किया।

जन-कल्याण, जल प्रबंधन एवं यवनों पर विजय (वर्ष 5 से 9)

पंचम वर्ष (नहर परियोजना): खारवेल ने प्राचीन जल-प्रबंधन का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया। उसने एक नंद राजा द्वारा 300 (या 103) वर्ष पूर्व निर्मित नहर का विस्तार कर उसे तनसुलि से कलिंग नगर तक पहुँचाया। यह तथ्य नंद साम्राज्य की कलिंग विजय का भी एकमात्र साक्ष्य है [10]।

आठवां वर्ष (यवन आक्रमण): खारवेल ने मगध के बराबर पहाड़ी (गोरथगिरि) के दुर्गों को ध्वस्त कर राजगृह को घेर लिया। यह आक्रमण इतना भयंकर था कि उत्तर-पश्चिम का इंडो-ग्रीक (यवन) शासक 'दिमित' (जायसवाल इसे 'डेमेट्रियस' मानते हैं) भयभीत होकर मथुरा भाग गया [4]।

नौवां वर्ष: अपनी विजय के उपलक्ष्य में उसने 38 लाख मुद्राओं की लागत से 'महाविजय प्रासाद' (The Palace of Great Victory) का निर्माण करवाया।

भारतवर्ष अभियान, दक्षिण विजय और कलिंग-जिन (वर्ष 10 से 13)

दसवां वर्ष: खारवेल ने गंगा घाटी के क्षेत्रों में सैन्य अभियान किया। यहाँ अभिलेख में 'भरध्वस' (भारतवर्ष) शब्द का प्रयोग हुआ है, जो भारतीय इतिहास में इस शब्द का प्रथम पुरातात्विक साक्ष्य है [11]।

ग्यारहवां वर्ष (तमिल संघ का विनाश): उसने 113 वर्ष पुराने 'तमिल संघ' (Tamiliradesa-sanghata) का भेदन किया। पिथुंड नगर को नष्ट कर वहाँ गंधों का हल चलवाया।

बारहवां वर्ष (मगध पर सर्वोच्चता): खारवेल ने मगध के शासक 'बृहस्पति मित्र' (बृहस्पतिमित्त) को पराजित कर अपने चरणों में झुकाया। वह मगध से कलिंग की उस प्राचीन 'कलिंग-जिन' (तीर्थंकर ऋषभदेव) की मूर्ति को पुनः कलिंग ले आया, जिसे नंद राजा कलिंग से ले गया था। इसी वर्ष उसने दक्षिण के पाण्ड्य राज्य को भी पराजित कर अपार मुक्तमणियां प्राप्त कीं [12]।

तेरहवां वर्ष: अपने शासन के अंतिम ज्ञात वर्ष में, उसने कुमारी पर्वत पर जैन अर्हंतों (भिक्षुओं) के लिए 'जीवदेहा-श्रयिकाएँ'

(गुफाएँ) खुदवाईं और एक महान जैन संगीति का आयोजन किया।

अंतर्विषयक ऐतिहासिक विमर्श

धार्मिक सहिष्णुता और जैन वास्तुकला

हाथीगुम्फा अभिलेख जैन 'णमोकार मंत्र' से आरंभ होता है। खारवेल के समय कलिंग में जैन धर्म का चरमोत्कर्ष था। 'कलिंग-जिन' की घटना ईसा पूर्व प्रथम सदी में जैन धर्म में 'मूर्ति पूजा' की प्राचीनता को अकाट्य रूप से सिद्ध करती है [13]। तथापि, खारवेल एक सहिष्णु शासक था; अभिलेख के अनुसार उसने सभी देवी-देवताओं के मंदिरों की मरम्मत करवाई और ब्राह्मणों को 'जय-परिहार' (कर-मुक्त जागीरें) दान में दीं।

भू-राजनीतिक महत्व

यह अभिलेख मौर्योत्तर काल की सामरिक शून्यता को दर्शाता है। खारवेल एकमात्र ऐसा शासक था जिसने एक ही जीवनकाल में उत्तर (मगध एवं यवन), पश्चिम (सातवाहन), और सुदूर दक्षिण (तमिल संघ और पाण्ड्य) की शक्तियों को कुचला। यह अभिलेख कलिंग के नौसैनिक और व्यापारिक एकाधिकार (पाण्ड्यों से मोती प्राप्त करना) की भी पुष्टि करता है [14]।

निष्कर्ष

कलिंग नरेश खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख केवल एक राजा की विजय-गाथा नहीं है, बल्कि यह ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी के भारत का राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक दर्पण है। स्वदेशी शासकों में सर्वप्रथम 'महाराज' की उपाधि धारण करना, 'भारतवर्ष' की भौगोलिक अवधारणा का प्रथम उल्लेख करना, जैन कला का संरक्षण और जल-प्रबंधन नीतियाँ—ये सभी तत्व मिलकर हाथीगुम्फा अभिलेख को प्राचीन भारतीय पुरालेखशास्त्र (Epigraphy) का सर्वोत्कृष्ट और अद्वितीय दस्तावेज सिद्ध करते हैं [15][16]। यदि यह अभिलेख काल-कवलि हो गया होता, तो महामेघवाहन वंश और खारवेल का महान साम्राज्य इतिहास के पन्नों से सदैव के लिए विलुप्त रहता।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- [1] थापर, रोमिला (Thapar, Romila). Early India: From the Origins to AD 1300. University of California Press, Berkeley, 2002, पृ. 220-222.
- [2] मित्तल, ए. सी. (Mittal, A. C.). An Early History of Orissa. Jain Brothers, Varanasi, 1962, पृ. 15-18.
- [3] मित्रा, देबला (Mitra, Debala). Udayagiri and Khandagiri. Archaeological Survey of India (ASI), New Delhi, 1975, पृ. 12-14.
- [4] जायसवाल, के. पी. एवं बनर्जी, आर. डी. (Jayaswal, K. P. & Banerji, R. D.). The Hathigumpha Inscription of Kharavela, Epigraphia Indica, Vol. XX. Archaeological Survey of India, New Delhi, 1929-30, पृ. 71-89.
- [5] बरुआ, बी. एम. (Barua, B. M.). Old Brahmi Inscriptions in the Udayagiri and Khandagiri Caves. University of Calcutta, Calcutta, 1929, पृ. 1-15.
- [6] सालोमन, रिचर्ड (Salomon, Richard). Indian Epigraphy: A Guide to the Study of Inscriptions in Sanskrit, Prakrit, and the Other Indo-Aryan Languages. Oxford University Press, New York, 1998, पृ. 142-143.

- [7] श्रीवास्तव, के. सी. (Srivastava, K. C.). प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति (Prachin Bharat ka Itihas tatha Sanskriti). United Book Depot, Allahabad, 2015, पृ. 415-416.
- [8] सिंह, उपेंद्र (Singh, Upinder). A History of Ancient and Early Medieval India: From the Stone Age to the 12th Century. Pearson Education, New Delhi, 2008, पृ. 378.
- [9] मजूमदार, आर. सी. (संपा.) (Majumdar, R. C., Ed.). The History and Culture of the Indian People, Vol. II: The Age of Imperial Unity. Bharatiya Vidya Bhavan, Bombay, 1951, पृ. 212-215.
- [10] रायचौधरी, एच. सी. (Raychaudhuri, H. C.). Political History of Ancient India. University of Calcutta, Calcutta, 1953, पृ. 377-379.
- [11] सरकार, डी. सी. (Sircar, D. C.). Select Inscriptions Bearing on Indian History and Civilization, Vol. I. University of Calcutta, Calcutta, 1965, पृ. 213-221.
- [12] साहू, एन. के. (Sahu, N. K.). Kharavela. Orissa State Museum, Bhubaneswar, 1984, पृ. 120-125.
- [13] जैन, कैलाश चंद (Jain, Kailash Chand). Lord Mahāvīra and His Times. Motilal Banarsidass, Delhi, 1974, पृ. 150-152.
- [14] पाणिग्रही, के. सी. (Panigrahi, K. C.). History of Orissa (Hindu Period). Kitab Mahal, Cuttack, 1981, पृ. 35-40.
- [15] ल्यूडर्स, एच. (Lüders, H.). A List of Brahmi Inscriptions from the Earliest Times to about A.D. 400, Epigraphia Indica, Vol. X (Appendix). Archaeological Survey of India, New Delhi, 1912, पृ. 160-161.
- [16] गोयल, एस. आर. (Goyal, S. R.). प्राचीन भारतीय अभिलेख संग्रह (Prachin Bharatiya Abhilekh Sangrah). Rajasthan Hindi Granth Academy, Jaipur, 1982, पृ. 320-325.